डिप्लोमा इन आयुर्वेद फार्मेसिस्ट (प्रथम वर्ष)

प्रथम प्रश्न–पत्र

आयुर्वेद परिचय एवं स्वस्थ्युक्त

कुल अंक–100

आयुर्वेद परिचय–

1. आयुर्वेद शब्द की निरूपित।
2. आयुर्वेद की परिभाषा।
3. सुखाद्रि आयु का लक्षण।
4. हितायु और अहितायु।
5. आयु का मान।
6. आरोग्य और अनारोग्य।
7. आयुर्वेद का शाश्वतत्व।
8. पुरूषार्थ चतुष्टय।
9. चतुविध पुरूषार्थ साधन के रूप में आरोग्य का प्रतिपादन।
10. आयुर्वेद का प्रयोजन
11. आयुर्वेद का अधिष्ठान।
12. लोक सम्मत पुरूष।
13. आयुर्वेदावतरण।
14. आयुर्वेद के आठ अंग।
15. चिकित्सा के चतुष्पाद ओर उसमें वैद्य का प्राधान्य।
16. तीन एषणाएं।
17. वैद्यकीय आचार संहिता।
18. भिषक् लक्षण।
19. प्राणोभसर वैद्य के लक्षण।
20. रोगाभिसर वेद्य के लक्षण।
21. वैद्य का त्रिविधत्व।
22. भिषक् के गुण।
23. उभयज्ञ वैद्य की श्रेष्ठता।
24. दोष धातु–मत का सामान्य परिचय।

स्वास्थ्य विज्ञान–

क) व्यक्तिगत स्वास्थ्य– आरोग्य की व्याख्या, आरोग्य तथा रोग के लक्षण, स्वस्थ पुरूष के लक्षण, नित्य ब्रहममुहूर्त में उठने के लाभ शौच–विधि, दन्तशोधन, नेत्र–रक्षा, अभ्यंग, स्नान, व्यायाम, वस्त्र परिधान, दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुदोष–संबंध निद्रावर्ग–विधारण, प्रज्ञापराध।

ख) सार्वजनिक स्वास्थ्य – गृह निर्माण, गृह के भिन्न–भिन्न विभागों की व्यवस्था, किराये के गृह, वायु संचालन, नागरिक स्वच्छता, जलाशयों को प्रबंध, विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों तथा व्यावसायिक स्थानों का स्वास्थ्य।

ग) आहार संगठन, आहार, विधि, आहार काल, आहार और रोग, भोजन के नियम, भोजन के पश्चात् कर्म, विरूद्धाहार ।

घ) ब्रहम्चर्य की व्याख्या, ब्रहम्चर्य के फल, वीर्यनाश का फल, वाल विवाह के दोष, मद्यसेवन के दोष, चरकोक्त सद्वृत का ज्ञान, रोगोत्पादक भावों का ज्ञान, आचार रसायन, उपवास व्याख्या एवं उसका फल, दूषित जल शोधन–रीति, वायु शुद्धि।

ड़) जनपदोद्वंश–देश के भेद तथा जनपदोदृध्वंस के कारण, वायु विकृति, जल विकृति, देश विकृति, काल वकृति, संक्रामक रोगों की रूकावट, संक्रामक रोगों से रक्षा के उपाय, पृथ्क्करण की व्यवस्था, विभिन्न संक्रामक रोगों का प्रसार एवं प्रतिशेध एवं सामान्य व्याधियां, मैथुनजन्य फिरंग, उपदेश, कुष्ठ आदि दूषित जल एवं वायु जन्य व्याधियों एवं उनका प्रसार करने वाले कीटाणु।

च) जनसंख्या की समस्यायें – फार्मेसिस्ट का परिवार, कल्याण प्रोग्राम में स्थान उस समाज को परिवार कल्याण के प्रति शिक्षित करना तथा चिकित्सालय, औषद्यालय, फार्मेसी और अन्य संस्थाओं में इसे सफल बनाना।

छ) परिवार कल्याण के विभिन्न सिद्धान्त, विभिन्न रासायनिक द्रव्य, मुख द्वारा प्रयुक्त औषधि द्रव्य एवं अन्य गर्भ निरोधक उपाय।

ज) गर्भ निरोधक द्रव्यों के प्रयोग के सिद्धान्त, संरक्षण, प्रकार एवं उनके परीक्षण के तरीके।